वी॰सी॰डी॰ नं॰169 ऑडियो कैसेट नं॰650

तिरुपति (आन्ध्र प्रदेश) मुरली व्याख्या ता. 29-11-65 ता॰ 20-1-05

# सुख-शांति की प्राप्ति एक मात्र शिवबाबा से

ओम शांति! आज है 29/11/65 का प्रातःक्लास। रिकॉर्ड चला है- तुम्हें पा के हमने जहाँ पा लिया है, ज़मी तो ज़मी आसमान पा लिया है। किसे पाकर पा लिया है और क्या पा लिया है? तुम्हें मतलब किसे? बिंदु को? बिंदु सुप्रीम सोल तो सदाकाल है ही है। जैसे हमारी आत्माएँ सदाकाल हैं ही हैं। पाने और न पाने की बात ही नहीं; लेकिन वह सुप्रीम सोल जब इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष होता है और हम ये बात बुद्धि से समझ लेते हैं कि वह निराकार सुप्रीम सोल शिव किसी साकार मुकर्रर मनुष्य तन के द्वारा इस संसार में प्रत्यक्ष हुआ है और ऐसे तन के द्वारा प्रत्यक्ष हुआ है, जिस तन की धारण करने वाली आत्मा सारी मनुष्य सृष्टि की हीरो पार्टधारी है। जब ये हमारी बुद्धि में बैठ जाता है कि सारी मनुष्य सृष्टि का बीज, पिता, परमात्मा, जिसके लिए हम 63 जन्म से भटकते आए, तीर्थों में, टिकानों में माथा टेकते आए और कहीं भी नहीं मिला, वह हमें प्राप्त हो चुका है। जिस बीज के पाने से सारा मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ जैसे हमारी बुद्धि रूपी मुट्ठी में आ जाता है। बीज को पा लिया तो बीज में सारा झाड़ तो समाया हुआ ही है। मीठे-2 बच्चे जानते हैं कि अभी ऐसे बेहद के बाप से हमको वर्सा मिल रहा है। बेहद के बाप का वर्सा भी बेहद का होता है। हद के बाप से हद का अल्पकाल का वर्सा मिलता है। लाख, करोड़, अरब, ज़्यादा से ज़्यादा 10 अरब का वर्सा मिल जाएगा। बाप हेल्दी होगा तो बच्चा भी हेल्दी बन जाएगा; लेकिन वह हेल्थ और वेल्थ सदाकाल की नहीं हो सकती। एक जन्म के लिए भी पूरी पड़े या न पड़े; लेकिन जो मनुष्य सृष्टि का बेहद का बाप है, उसके द्वारा सुप्रीम सोल शिव आकर के हमको जो सुख-शान्ति का अखण्ड वर्सा देता है वो वर्सा अविनाशी है। एक जन्म का नहीं है। हम चाहें तो उसकी श्रीमत पर चलकर के, पूरा पुरुषार्थ करके अनेक जन्मों का सुख-शान्ति का वर्सा ले सकते हैं। उससे जो सुख का वर्सा मिलता है उसे शास्त्रों में जीवनमुक्ति गाई हुई है और जो शान्ति का वर्सा मिलता है, उसे मुक्ति कहते हैं। वह आकर के हमको मुक्ति-जीवनमुक्ति का बेहद का वर्सा देता है। ये बहुत समझने की बातें हैं। कहावत है परमपिता परमात्मा धर्म स्थापकों को भेज देते हैं अपना-2 धर्म स्थापन करने के लिए। वह धर्मपिताएँ आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं; परन्तु ऐसे नहीं कि वे इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक आदि आकर के कोई हमको बेहद का वर्सा दे देते हैं। नहीं। उनसे बेहद के वर्से की बात ही नहीं निकलती। वास्तव में इस सृष्टि को सुख-शान्ति का वर्सा देने वाला एक ही बाप है। क्राइस्ट की आत्मा सभी का बाप थोड़े ही है, जो सारी मनुष्य सृष्टि को वर्सा देगी। सिर्फ क्रिश्चियन्स लोग उनको अपना बाप मानते हैं। तो बेहद का बाप तो नहीं हुआ। भले आज इस मनुष्य सृष्टि में 100 करोड़ से भी ऊपर क्रिश्चियन्स हैं; लेकिन दुनिया की आबादी तो 500/700 करोड़ है। सारी दुनिया तो उनको अपना बाप नहीं मानती। बेहद का बाप वह है, जिसको क्राइस्ट भी गॉड फादर के नाम से जानता था। जो भी धर्मपिताएँ हैं वे सब उसे मानते हैं। क्राइस्ट भी क्रिश्चियन्स का बाप है। भला वे क्रिश्चियन्स को कौन-सा वर्सा देते हैं? प्रश्न तो उठता है ना और वह वर्सा किसको देंगे? वह तो सिर्फ अपना धर्म स्थापन करने के लिए आते हैं। धर्म की धारणाएँ स्थापन करते हैं और चले जाते हैं। उनके पीछे दूसरे-2 क्रिश्चियन्स आते रहते हैं। दूसरे धर्म की आत्माएँ भी आती रहती हैं। धर्मपिताएँ आते हैं वे अपने-2 धर्म स्थापन करते हैं। (जीवन पर्यंत) सुख-शान्ति का वर्सा तो कोई नहीं देते। दुनिया तो नीचे ही गिरती चली जाती है।

दुनिया में दुःख और अशान्ति बढ़ती चली जाती है। (सदाकाल) सुख-शान्ति के वर्से की बात ही नहीं। (बेहद) बाप से वर्सा लेना होता है। समझो इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट आए उन्होंने क्या किया? किसी को वर्सा दिया? नहीं। ये वर्सा देना बाप का काम है। वह तो खुद आते हैं। आत्माएँ आती हैं, शरीर छोड़के चली जाती हैं। पता नहीं चलता कहाँ चली गईं। सृष्टि वृद्धि को पाती रहती है। इससे साबित होता है कि वे आत्माएँ कहीं वापस नहीं चली जातीं, इसी दुनिया में जन्म लेती रहती हैं और नीचे गिरती रहती हैं। वर्सा हमेशा क्रियेटर से मिलता है। क्रियेटर कहा जाता है बाप को और क्रियेशन/रचना कहा जाता है बच्चों को। क्रियेटर एक है लौकिक बाप और दूसरा है पारलौकिक बाप। लौकिक बाप से एक जन्म का अल्पकाल का वर्सा मिलता है। पारलौकिक बाप से अनेक जन्मों का अविनाशी वर्सा मिलता है। ये बड़ी समझने, धारण करने की बातें हैं। धारणा भी उनको होगी जो औरों को दान करते रहेंगे। ज्ञानरत्नों का दान, गुणरत्नों का दान जो दूसरों को करते रहेंगे तो उनका अपना ज्ञान, अपने गुण स्वतः ही बढ़ते रहेंगे। जो ईश्वर का ज्ञान लेकर दूसरों को नहीं देता उसका अपना ज्ञान भी नहीं बढ़ सकता। कहते भी हैं- धन दिये धन न खूटे। वह स्थूल धन लुटा दो तो लूट जाता है, खत्म हो जाता है और ये ज्ञान धन जो ईश्वर से मिलता है वो कभी देने से खूटता नहीं है। अभी बेहद का बाप सभी बच्चों को वर्सा देने आया है। बेहद का बाप ही बच्चों को बेहद का वर्सा देते हैं। क्रिश्चियन्स, इस्लामी, बौद्धी आदि सभी का बाप एक है और सभी कहते हैं गॉडफादर। क्राइस्ट ने भी कहा है गॉड फादर। फादर को कोई कब भूलते नहीं हैं। गॉड फादर एक ही निराकार को कहा जाता है। एक ही का क्या मतलब और निराकार का क्या मतलब? समझते हैं निराकार इन आँखों से देखने में नहीं आता। हमारी आत्मा भी तो निराकार है। हमारी ज्योतिबिंदु आत्मा जिसकी रोशनी इन आँखों से निकलती है वह इन आँखों से देखने में तो नहीं आती, वह भी तो निराकार है। जिसकी यादगार में भृकुटी के मध्य में बिंदी लगाते हैं। पुरुष लोग टीका लगाते हैं। इसका मतलब कि वह ज्योतिबिंदु चमकती हुई आत्मा, सितारा भृकुटी के मध्य में टिका हुआ है, जिसकी याद में टीका लगाते हैं। सभी निराकार आत्माओं का बाप एक ही है। बिंदु-2 आत्माएँ उनका बाप भी बिंदु। साँप लम्बा होगा तो साँप का बाप भी लम्बा होगा। कीटाणु छोटा होगा तो कीटाणु का बाप भी छोटा होगा। हाथी मोटा-ताजा होगा तो उसका बाप भी मोटा-ताजा होगा। बिंदु-2 आत्माओं का बाप शिव वह भी ज्योतिबिंदु है; लेकिन वह ज्योतिबिंदु गॉड फादर एक ही है और निराकार है। उसको याद करना है। (उसकी) पेक्युलिअरिटी(असाधारणता) का पता कैसे चले कि वह एक ही कौन है? क्योंकि आत्माएँ तो सभी ज्योतिबिंदु हैं। कीड़े, मकोड़े, पशु, पक्षी, मनुष्य, देवताएँ, राक्षस सभी की आत्माएँ ज्योतिबिंदु हैं। तो कौन-से ज्योतिबिंदु को याद करें? कौन-से निराकार को याद करें? वह निराकार ज्योतिबिंदु ज़रूर इस सृष्टि पर किसी में प्रवेश होता है और एक में ही प्रवेश होकर सारी सृष्टि पर प्रत्यक्ष होता है। एक मुकर्रर रथ में आता है। वह सर्वव्यापी होकर के नहीं आता है। अगर वह सर्वव्यापी होकर के आए, हर आत्मा में वह परमात्मा प्रत्यक्ष होने लगे तो उसको कोई भी पहचान नहीं पाएगा। सभी निराकार आत्माओं का बाप एक ही गॉड फादर है। वह एक निराकार धर्म स्थापकों का भी बाप है और उनसे ही वर्सा मिलता है। सभी गॉड फादर कहकर पुकारते हैं। सिर्फ एक भारत ही ऐसा कमबख़्त है, जो कहते हैं- ईश्वर सर्वव्यापी है। ईश्वर को कण-2 में, कच्छ-मच्छ जैसे जानवरों में व्यापक समझ लेते हैं। अब ऐसा कमबख़्त किसने बनाया? जिन्होंने ये बताया है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। खुद ही कम+बख़्त बने। ईश्वर सर्वव्यापी है फिर ईश्वर को याद (कैसे और) क्यों करते हैं? सबमें व्यापक है तो फिर सबको

याद करें, फिर ईश्वर की स्पेशल प्रतिमा बनाकर के क्यों रखते हैं? साधु लोग साधना किसकी करते हैं और प्रार्थना किसकी करते हैं? बाप आएँगे तो ये बात पूछेंगे ना। क्रियेटर सबका एक है। देवताओं का भी क्रियेटर एक है, मनुष्यों का भी क्रियेटर एक है। वह ही पतित-पावन है। क्रियेटर अविनाशी को नहीं कहा जाता। आत्मा अविनाशी, आत्माओं का बाप ज्योतिबिंदु परमात्मा अविनाशी, उसे क्रियेट करने की बात नहीं; क्योंकि आत्मा क्रियेट नहीं होती। आत्मा बनाई नहीं जाती। आत्मा तो अजर, अमर, अविनाशी है; लेकिन आत्मा जब शरीर में प्रवेश करे तो क्रियेटर कही जा सकती है। अब देवताओं को क्रियेट किसने किया ? कलियुग के अंत में तो सारी मनुष्य सृष्टि होती है। सब भूल करने वाले मनुष्य हैं। बिगड़ैल मनुष्य बनता है तो राक्षस कहा जाता है। उन मनुष्यों को राक्षस से देवता बनाने वाला परमपिता-परमात्मा है। सतयुग में तो सब पावन होते हैं, सत् होते हैं, वहाँ झूठा कोई होता ही नहीं, फिर पतित कैसे बनते हैं? ये किसी की बुद्धि में नहीं आता कि पतित कैसे बनते हैं। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि रावण रूपी दुश्मन हमको पतित बनाते हैं। लिखा हुआ है- देवताएँ वाममार्ग में गये। बायाँ हाथ और ये दायाँ हाथ, शुभ कौन-सा माना जाता है? दायाँ हाथ शुभ माना जाता है और बायाँ हाथ अशुभ माना जाता है। दाएँ हाथ से दान धर्म किया जाता है, अच्छे कर्म किये जाते हैं। बाएँ हाथ से कचड़ा साफ किया जाता है। तो बायाँ अशुभ है और दायाँ हाथ शुभ है मतलब देवताएँ वाममार्ग में गये यानी उल्टे मार्ग में चले गये। जिस मार्ग पर नहीं जाना चाहिए, जो मार्ग श्रीमत्भगवद्गीता के बरखिलाफ़ है उस मार्ग पर चले गये। गीता में लिखा हुआ है- हे अर्जुन! ये काम महाशत्रु है तू इसको त्याग दे; लेकिन जब वाममार्ग में गये तो पुस्तक ज्यों की त्यों धरी रह जाती है। कोई भी काम विकार को त्यागने का पूरा पुरुषार्थ नहीं कर पाता; क्योंकि किसी को पता ही नहीं है कि वे निर्विकारी देवताएँ विकारी कैसे बन गये। वाममार्ग में जाना मतलब पतित बन जाना। देवताएँ पतित नहीं होते थे, नीचे नहीं गिरते थे, न तन की शक्ति से नीचे गिरते थे, तन की शक्ति भी क्षीण नहीं होती थी, मन की शक्तियाँ भी क्षीण नहीं होती थी। जो तन और मन से कभी पतित नहीं बने, वे देवताएँ आज पूजे जाते हैं। मंदिरों में उनकी हम पूजा करते हैं। कौन पूजा करते हैं? जो पतित बनते हैं, वाममार्ग में जाते हैं, उल्टा रास्ता पकड़ते हैं वह मंदिर बनाकर के पूजा करते हैं। अब बाप आये हैं कहते हैं बच्चे तुम ही देवता थे। मैंने आकर के तुमको गीता ज्ञान देकर नर से नारायण बनाया था। जैसे गीता में लिखा हुआ है कि हे! अर्जुन, तू वह कर्म कर जो मैं बताता हूँ। मैं कर्म, अकर्म, विकर्म की गति बताता हूँ। ये कर्म-विकर्म की गति कोई नहीं बता सकता। अगर बताया होता तो दुनिया में कर्मों का सुधार हुआ होता। दुनिया नीचे नहीं गिरती। मैं आकर के कर्म की गुह्य गति बताता हूँ। जो कर्म की गुह्य गति समझते हैं, ईश्वरीय ज्ञान को धारण करते हैं वे मनुष्य से देवता बनते हैं। अभी ये पावन दुनिया बन रही है। सारी दुनिया एक साथ पावन नहीं बन सकती। ऐसे नहीं कि इस दुनिया में जो भी 500/700 करोड़ मनुष्य हैं वे परमात्मा के आने मात्र से ही एकदम पावन देवताएँ बन जावेंगे। दुनिया का कोई भी धर्म स्थापन होता है उसमें टाइम लगता है। कोई भी धर्मपिताएँ आए 100/50 वर्ष का टाइम लगा, तब धर्म की स्थापना होती है। यहाँ तो परमात्मा बाप आकर के सिर्फ धर्म की स्थापना ही नहीं करते, बल्कि आदि सनातन देवता धर्म की राजाई भी स्थापना करके जाते हैं, राजधानी स्थापन करके जाते हैं और इतना ही नहीं, जो पुराने दुष्ट धर्म चल रहे हैं, धर्म के नाम पर आडम्बर हो चुके हैं, उन सबका विनाश कराय देते हैं। “धर्मसंस्थापनार्थाय विनाशाय च दुष्कृताम्” (गीता 4/8) सत्धर्म की स्थापना करता हूँ और दुष्ट धर्मों का विनाश कर देता हूँ। दुष्ट धारणाओं को मानने वाले कोई भी

इस सृष्टि पर नहीं रहेंगे। द्वापर आदि से पतित दुनिया शुरु होती है। सतयुग और त्रेता राम-कृष्ण की भूमि है। भारत में ही ये भूमि थी। वहाँ सब पुण्यात्माएँ थे। शास्त्रों में तो मनुष्य गुरुओं ने अगड़म-बगड़म कर दिया है। एक तरफ कहते हैं सतयुग में 16 कला सम्पूर्ण देवताएँ थे, नारायण का राज्य था और दूसरी तरफ लिख दिया वहाँ हिरण्यकश्यप का राज्य था। अरे, दोनों बातें कैसे सिद्ध होंगी? एक तरफ कहते हैं रामराज्य में सब प्रकार का सुख था, कोई भी प्रकार का दुःख नहीं था। दूसरी तरफ कह देते हैं राम की सीता चुराई गई। जो राम राजा! उसकी ही सीता चुरा ली जायेगी, तो दूसरों का क्या ठिकाना रहेगा? ये सब अनर्गल बातें हो जाती हैं। वास्तव में सतयुग-त्रेता भारत की वो भूमि है जहाँ कोई भी प्रकार का किसी को दुःख नहीं होता। सुख-शान्ति से सम्पन्न दो युग हैं और उन युगों की स्थापना, उन युगों में धर्म का संचार परमात्मा बाप आकर के करते हैं। जब दो युग पूरे होते हैं, तब तीसरा युग आता है द्वापरयुग। उसका नाम ही है द्वा+पुर, दो पुर। दो-2 राज्य हो जाते हैं, दो-2 धर्म हो जाते हैं, दो-2 मतें हो जाती हैं, दो में से चार, चार में से आठ। दुनिया में झगड़े पैदा होते रहते हैं, अनेक भाषाएँ हो जाती हैं। कलियुग अंत में आते-2 कलह-कलेश चरम सीमा को पहुँच जाता है। सारे ही धर्मपिताएँ आकर के अपना करिश्मा दिखाकर चले जाते हैं। इस सृष्टि पर कोई भी सुख-शान्ति स्थापन नहीं कर पाता। सुख की दुनिया नहीं बना पाता। सब हाथ उठाय देते हैं। गाँधीजी ने कितना प्रयास किया! भारत में रामराज्य लाएँगे; शरीर छोड़कर चले गये। फिर रिज़ल्ट क्या हुआ? और ही रावण राज्य हो गया। अभी बाप कहते हैं कि मैं आया हुआ हूँ। रामराज्य स्थापन करना निराकार और साकार राम का ही काम है। ये कोई मनुष्य का काम नहीं है। अगर मनुष्यों का काम होता तो हिस्ट्री में 2500 वर्ष का खाता (इतिहास) हमारे पास है-मनुष्य सृष्टि ऊपर उठी होती। स्नेह, सहानुभूति, सहनशीलता मनुष्य में बढ़ी होती; लेकिन ये दिव्य गुण घटते गये या बढ़ते गये? और ही घटते गये। सारी दुनिया का पतन होता है द्वापर से, जब दूसरे-2 धर्मपिताएँ आते हैं और दूसरे-2 धर्म स्थापन करते हैं। ईश्वरीय राज्य और आसुरी राज्य कहा तो जाता है ना। सतयुग-त्रेता है ईश्वर का स्थापन किया हुआ राज्य और द्वापर-कलियुग है असुरों के द्वारा स्थापन किया हुआ राज्य। भारत की ही बात है। रावण को भारत में ही जलाते हैं। दूसरे देशों में रावण को नहीं जलाते। क्यों? भारत में क्या रावण विदेश से आता है? ये रावण कहाँ का वासी है और राम कहाँ का वासी है? कहते हैं राम अयोध्या का वासी है। अ मतलब नहीं, योध्या मतलब युद्ध जहाँ नहीं होता। तो सतयुग-त्रेता में कोई युद्ध नहीं होता, जहाँ राम का राज्य था। जब द्वापर शुरु होता है, दुःख शुरु होता है तब भी रावण को नहीं जलाते हैं; क्योंकि द्वापर में फिर भी 8 कलाएँ रहती हैं; लेकिन कलियुग कलाहीन हो जाता है, कोई गुण मनुष्य में नहीं रहते, सब अवगुणी हो जाते हैं, तब रावण को जलाना शुरु करते हैं। दुनिया में भी देखा जाता है बड़े-2 नेताओं के पुतले जलाते हैं। कब जलाते हैं? जब कोई ज़्यादा दुःखी करते हैं, बहुत दुःखी हो जाते हैं तो उसका पुतला बनाकर जलाते हैं। तो भारत में कलियुग से रावण का पुतला जलाते चले आते हैं। बाबा ने समझाया है और धर्म स्थापक किसको भी (सुख-शांति का) वर्सा नहीं देते हैं। वे सिर्फ (अपना अधूरा) धर्म स्थापन करते हैं; इसलिए उनको याद करते हैं। बाकी क्राइस्ट की वा ब्र॰वि॰शं॰ की बैठ प्रार्थना करने से वे कुछ भी नहीं देंगे। क्राइस्ट की उपासना करो, ब्रह्मा की पूजा करो, विष्णु की पूजा करो, शंकर की पूजा करो उनसे कुछ मिलने वाला नहीं है और वो तो 2500 वर्ष से करते ही चले आये। विष्णु की मूर्तियाँ बनाई उनकी पूजा करते रहे, शंकर की मूर्तियाँ बनाई उनकी पूजा करते रहे; लेकिन सुख-शान्ति तो नहीं मिली। सुख-शान्ति मिलती ही तब है, जब वह

निराकार ज्योति सदाशिव इस सृष्टि पर आता है और ब्र०वि०शं० के द्वारा अपना कार्य शुरु करता है, तो उनको सन्मुख आना पड़ता है। मुँख के सामने आना पड़े, हाज़रा हुजूर होना पड़े, प्रेज़ेन्ट होना पड़े। कृष्ण में परमात्मा आते हैं, ऐसा तो दुनिया में कोई नहीं मानते। हाँ, ये कहते हैं कृष्ण भगवान था और वह अर्जुन के रथ में आया था। तो समझ लेते हैं कि वह कोई स्थूल रथ हुआ होगा। वास्तव में इस शरीर को ही रथ कहा जाता है। इस शरीर में इन्द्रियों रूपी घोड़े हैं। इन इन्द्रियों को मनुष्य कन्ट्रोल में नहीं रख पा रहा है। जब इंद्रियाँ कन्ट्रोल से बाहर हो जाती हैं, कोई के कन्ट्रोल में नहीं रहतीं, तब वह सुप्रीम सोल शरीर रूपी रथ में प्रवेश करता है और इन इन्द्रियों रूपी घोड़ों को राजयोग के द्वारा कन्ट्रोल करना सिखाता है। ऐसा ज्ञान देता है। बाप कहते हैं कि मैं तुम बच्चों को वर्सा देने के लिए एक ही टाइम पर आता हूँ। शास्त्रों में तो लिख दिया सतयुग में आता है, नरसिंग का अवतार लेता है, हिरण्यकश्यप को मारता है। त्रेता में राम बनकर आता है रावण को मारता है, द्वापर में कृष्ण भगवान बनकर आता है और कौरवों का, यादवों का संहार करता है। अरे, कृष्ण भगवान बनकर के द्वापर में आए और द्वापर के अंत में महाभारत युद्ध कराने के बाद रिज़ल्ट निकले कलियुग की स्थापना! भगवान पापी कलियुग की स्थापना करने आता है क्या? भगवान पाप की स्थापना करने आएगा? नहीं। ये सब बातें मनुष्य गुरुओं ने लिखी हैं। बाप आकर बताते हैं मैं तो आता ही तब हूँ जब ये सृष्टि पूरी पतित हो जाती है। दुनिया में भी कोई बाप होते हैं अपने बच्चों के लिए मकान तब ही बनाते हैं, जब मकान बहुत पुराना हो जाता है। जब तक रिपेरिंग से काम चल सकता है, तब तक उसमें रिपेरिंग करते रहते हैं, फिर जब रिपेरिंग से काम नहीं चलता तब पुराना मकान तुड़वा करके नया मकान बच्चों के लिए बनाते हैं। ये भी सृष्टि रूपी मकान है। ये सृष्टि रूपी मकान जब अति पुराना होना शुरू होता है, तो द्वापर से इब्राहिम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक आदि धर्मपिताएं आकर समय-2 पर, स्थान-2 पर इसकी रिपेरिंग का काम कराते हैं। 2500 साल पहले अरब देश में इस्लाम धर्म स्थापन हुआ, 2000 साल पहले यूरोपीय देशों में क्राइस्ट के द्वारा क्रिश्चियन धर्म स्थापन हुआ। चीन-जापान आदि पूर्वी देशों में महात्मा बुद्ध के द्वारा बौद्ध धर्म स्थापन हुआ। ऐसे-2 एक के बाद एक, द्वापुरादि से थोड़े-2 वर्षों के बाद एक-2 धर्मपिताएँ आते रहते हैं और सृष्टि की मरम्मत करते रहते हैं। अपने-2 प्रकार से धर्म की धारणाएँ सिखाते रहते हैं; लेकिन नया मकान कोई नहीं बनाता। ये नया मकान बनाना और पुरानी सृष्टि को खलास कर देना एक परमपिता-परमात्मा शिव का ही काम है। इसलिए सभी धर्म स्थापक आज भी उस परमपिता-परमात्मा को याद करते हैं। तो उसको सन्मुख आना पड़े। जैसे धर्मपिताएँ आते हैं अपने धर्म की स्थापना करने। अपने फॉलोअर्स के सामने आते हैं ना। परमात्मा बाप भी जो निराकार ज्योति है, जिस निराकार ज्योति का बड़ा लिंग बनाते हैं, पूजा करते हैं। पूजा करने की सुविधा के लिए उस बिंदु का बड़ा आकार बनाते हैं, शिवलिंग। इतना बड़ा है नहीं। हमारी आत्मा की तरह वह भी ज्योतिबिंदु है, वह भी सितारा है। जैसे हम आत्मा इस धरती के चैतन्य सितारे हैं, वैसे वह परमात्मा भी सितारा है। वह सितारा बाप जब इस सृष्टि पर आता है तो वह दाता बनकर के आता है। हम बच्चों से लेता कुछ भी नहीं है। बाप कहते हैं- मैं ही तुमको सुख-शांति का वर्सा देने वाला हूँ। बाप या बाबा दो को कहा जाता है- एक होता है, शरीर का बाबा और दूसरा होता है, आत्माओं का बाबा और कोई बाबा हो नहीं सकता। हमको इस देहधारी मनुष्य प्रजापिता से, जो शरीरों का बाप है-वर्सा मिल नहीं सकता। जो भी मनुष्य सृष्टि 5-7 सौ करोड़ मनुष्य आत्माएँ हैं, या मनुष्य हैं उन मनुष्यों को जन्म देने वाला एक बीज है प्रजापिता, आदम या अर्जुन कहो, उससे हमको वर्सा नहीं मिल

सकता। क्राइस्ट से भी वर्सा नहीं मिल सकता या बुद्ध से भी वर्सा नहीं मिल सकता। वर्सा तब ही मिलता है जब वह सुप्रीम सोल प्रजापिता में प्रवेश करता है। तो साबित हुआ एक शिवबाबा से ही वर्सा मिलता है। उस शिव की बिंदी का ही नाम शिव है। वह ज्योतिबिंदु जब साकार शरीर रूपी रथ में प्रवेश करता है तो शिवबाबा कहा जाता है। नहीं तो वह बिंदु-2 आत्माओं का सिर्फ बाप है। दूसरा कोई संबंध नहीं बनता। संबंध तब बनते हैं जब वह साकार शरीर में आता है। गाते हैं- "त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव"। सब प्रकार के संबंध उस परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। प्रैक्टिकल शरीर में आया हुआ होगा तभी तो सम्बन्ध जोड़ेंगे। ये सिर्फ कहने की बातें थोड़े ही हैं। ब्र०वि०शं० भी उससे वर्सा लेते हैं। किससे? सुप्रीम सोल शिव बाप से। वह दाता है, सर्व का सद्गति दाता, सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता। इसलिए पहले-2 कोई को भी निराकार आत्माओं के बाप का परिचय देना चाहिए। उसके बाद अर्जुन-देह का परिचय देना ही पड़े। बाप है तो बाप के बच्चे भी होंगे। वह बाप है हम बिंदु-2 आत्माओं का और हम बिंदु-2 आत्माएँ उसके बच्चे हैं। कोई को भी ज्ञान सुनाना शुरू करना है तो सबसे पहले क्या बताना है? तुम ज्योतिबिंदु आत्मा हो। तुम ये विनाशी शरीर नहीं हो। ये शरीर तो आज है और कल खलास हो जावेगा। तुम ज्योतिबिंदु आत्मा फिर भी बनी रहेंगी। तुम ज्योतिबिंदु आत्मा अपने स्वरुप को जानो और अपने बाप को पहचानो। जब अपने बाप की पहचान हो जाएगी कि वह सुप्रीम सोल ज्योतिबिंदु है, जिसकी यादगार सोमनाथ मंदिर में बनाई गई थी। सोमनाथ मंदिर में चारों तरफ की दीवाल में चुम्बक जड़ा हुआ था और बीच में निराधार शिवलिंग लटक रहा था, उस लिंग में हीरा जड़ा हुआ था लाल पत्थर में। लोहे से मिक्स हुए पत्थर का लिंग था और बीच में ज्योतिर्लिंगम् की यादगार हीरा था। तो वह लिंग किसकी यादगार हुई और वह हीरा किसकी यादगार हुई? हीरा है शिव ज्योतिबिंदु की यादगार और जो लाल पत्थर (का) लिंग था वह अंतिम जन्म में पत्थर बुद्धि बने शरीरधारी की यादगार है। जो ईश्वरीय पढ़ाई से ज्ञान का सागर बनकर संसार में प्रत्यक्ष होता है। बाप कहते हैं मुझ सुप्रीम को समझो। मैं जब हीरा जैसे में आकर के हीरो पार्टधारी में प्रवेश करता हूँ तब ही संसार का कल्याण होता है। इसलिए पहले-2 कोई को बाप का परिचय देना पड़े। यूँ तो कोई बड़े बुज़ुर्ग को भी बाबा वा पिताजी कह देते हैं; परंतु वास्तव में शिवबाबा कोई नहीं है। बाप एक लौकिक और दूसरा पारलौकिक होता है। कहेंगे ये ब्रह्मा भी जिस्मानी बाप है; क्योंकि ये भी एडॉप्ट करते हैं। भल तुम ब्रह्मा को बाबा कहते हो; परंतु वर्सा शिव से मिलता है। ब्रह्मा से वर्सा नहीं मिलता है। संसार में जो रूप परमात्मा बाप के रूप में प्रत्यक्ष होने वाला है उनसे ही वर्सा मिलता है। वह कौन-सा वर्सा है? गति-सद्गति का वर्सा है। जो इस समय ही हम बच्चों को देते हैं अर्थात् कलियुग के अंत और सतयुग के आदि में हमको वर्सा मिलता है। जब वर्सा मिलता है तो उसकी निशानी है, उसकी पहचान है सब दुःखों के बंधन से छूट जाते हैं, दुर्गति से छूट जाते हैं अर्थात् जो बंधनमय जीवन महसूस करते हैं उससे छुटकारा मिल जाता है। इस समय खास भारतवासी और आम सारी दुनिया रावण के बंधन में हैं। रावण ने सबको बांध रखा है। जैसे सब जेल में पड़े हुए हैं। पहले-2 जो आत्माएँ आती हैं वे पहले जीवनमुक्ति, फिर जीवनबंध में चली जाती हैं। कहाँ से आती हैं? कहीं से तो आती होंगी? नहीं तो इस दुनिया की जनसंख्या क्यों बढ़ती जाती है? मनुष्यों की ही जनसंख्या नहीं, कीट, पशु, पक्षी, पतंगे सबकी जनसंख्या में वृद्धि हो रही है। ज़रूर इस लोक से बाहर कहीं कोई दूसरा निराकारी आत्म-लोक है जहाँ से ये आत्माएँ आती हैं। उस लोक को अंग्रेज़ लोग कहते हैं- सुप्रीम एबोड, सोल वर्ल्ड। मुसलमान लोग कहते हैं- अर्श, सातवाँ आसमान। पहले कहते थे

खुदा अर्श में रहता है, फर्श में नहीं रहता। अभी तो मुसलमान भी कहने लगे खुदा ज़र्रे-2 में है। जब उसको हर जगह ढूँढा कहीं नहीं मिला तो कहने लगे वह सब में है, हर जगह सर्वव्यापक है। बाप कहते हैं ये सब आत्माएँ परमधाम से आती हैं। सूरज, चाँद, सितारों की दुनिया से भी परे एक ऐसा धाम है, जिसका गीता में वर्णन है, एक श्लोक आया है। न वहाँ सूरज, चाँद, सितारों का प्रकाश पहुँचता है। जहाँ जाकर के आत्माएँ वापस इस दुःख की दुनिया में नहीं लौटतीं वह मेरा परमधाम है। तुम बिंदु-2 आत्माएँ भी उस परमधाम की रहने वाली हो और मैं सुप्रीम सोल बाप भी वहाँ का रहने वाला हूँ। तुम इस सृष्टि पर आते हो तो थोड़ा-2 करके आते हो। सतयुग में थोड़ी आत्माएँ उतरती हैं, त्रेता में और ज़्यादा उतरती हैं, द्वापर में फिर और ज़्यादा उतरती हैं और कलियुग के अंत तक मनुष्य सृष्टि की सारी आत्माएँ नीचे उतर आती हैं। जब सबके उतरने का टाइम होता है तब वह सुप्रीम सोल इस सृष्टि पर आता है और आकर के सब आत्माओं को अपने स्वरूप का परिचय देता है कि तुम ज्योतिबिंदु आत्मा हो, स्टार हो, तुम धरती के चेतन सितारे हो। आसमान में जो सितारे चमकते हैं वह जड़ हैं। चैतन्य कहा जाता है चलते, फिरते, बोलते को। तुम चलते, फिरते, बोलते सितारे हो। ये परिचय देकर आत्माओं को उस स्वरुप में स्थिर कराता है कि तुम अब ये देहभान छोड़ दो। देह को याद करना मतलब मिट्टी को याद करना। मिट्टी को और पत्थर को याद करते-2 बुद्धि सारी पत्थर बन गई। यहाँ तक पत्थरबुद्धि बन पड़े हैं कि जिस डाली पर बैठते हैं वो डाली ही काट रहे हैं। दुनिया में एटमबॉम्ब बनाय रखे हैं। इस दुनिया में रहना भी है, फिर एटमबॉम्ब बनाकर के उस दुनिया को खलास करना चाहते हैं। ऐसी पत्थरबुद्धि बन गयी। ऐसे पत्थरबुद्धियों को परमात्मा बाप ज्ञान देकर के फिर पारसबुद्धि बना रहे हैं। मनुष्य को देवता बनाना ये परमात्मा बाप का काम है; लेकिन इस सृष्टि पर सतयुग में पहले-2 जो आत्माएँ आती हैं, वे श्रेष्ठ आत्माएँ होती हैं। सतयुग-त्रेता में सिर्फ देवात्माएँ ही इस सृष्टि पर आती हैं। उस समय सिर्फ भारत धर्म खण्ड ही होता है। दूसरे धर्म खण्ड नहीं होते। ये अमेरिका, ये ऑस्ट्रेलिया, ये अरब देश, दूसरे-2 धर्म खण्डों के जो देश हैं वो 2500 साल पहले इस सृष्टि पर नहीं थे। सब समुद्र में डूबे हुये थे। अभी भी ऐसा ही होगा। एटमबॉम्ब जब फटेंगे तो पृथ्वी का बैलन्स बिगड़ जाएगा। बड़े-2 भूकंप आएँगे। उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव में जो सैकड़ों मील ऊँचे बर्फ के पहाड़ जमे हुए हैं, एटमबॉम्बों की गर्मी से वो पहाड़ पिघल जाएँगे और जब वो पिघलेंगे तो दरार आने से सारे समुद्र में आ जाएँगे और समुद्र का स्तर बढ़ जाएगा, जब समुद्र का स्तर बढ़ेगा तो ये अफ्रिका, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अरब देश, जो पहले भी थे ही नहीं वो सब समुद्र में समा जाएँगे। सिर्फ भारत खण्ड रह जाएगा जहाँ भगवान आते हैं। भारत में ही भगवान क्यों आते हैं? कोई तो कारण होगा? ज़रूर भारत देव भूमि थी। देवताओं का देश है, देने वालों का देश है। ये मात-पिता का देश कहा जाता है। मात-पिता बच्चों को देते हैं, बेहद का बाप लेने की इच्छा नहीं करते। इस भारत देश में भगवान आया हुआ है। वह आकर के रास्ता बता रहा है कि इस दुनिया के विनाश होने से पहले अपना वर्सा मुझ बाप से ले लो। जो लेंगे, जो पुरुषार्थ करेंगे वह फायदे में रहेंगे। एक जन्म के फ़ायदे में नहीं, अनेक जन्मों का फ़ायदा हो जावेगा। जब अनेक जन्मों का फ़ायदा होता हो तो एक जन्म की जो थोड़ी सी प्राप्ति हो रही है उसको त्याग करने में क्या बड़ी बात है? इस जीवन का इतना लम्बा समय तो बीत गया। अब थोड़ा-सा टाइम बचा हुआ है। दूसरा विश्वयुद्ध हुआ था तो बीस-2 मेगावॉट की बम्बियाँ छूटी थीं। दुनिया में हाहाकार हो गया था। अभी तो हज़ारों हज़ार मेगावॉट के एटमबॉम्ब तैयार हो चुके हैं। कोई बड़ी बात नहीं है कब विश्वयुद्ध शुरु हो जाए और अगर तृतीय विश्वयुद्ध हुआ तो

सारे ही देश इस खूनी नाहक महाभारत युद्ध में कूद पड़ेंगे। अगर खुदा न खास्ता तृतीय विश्व युद्ध में कुछ सृष्टि रह भी गई, तो चौथा मूसलों रूपी मिसाइल्स का विश्व युद्ध होने में देर नहीं लगेगी। जिसमें ये सारी एटमिक दुनिया खलास हो जाएगी। अभी ज़्यादा टाइम नहीं है। अभी ईश्वर का कार्य भी लगभग पूरा हो चुका। जो ज्ञान देना था वह सारा ज्ञान दे दिया। अब समझाने के लिए परमात्मा के पास कुछ नहीं रहा। अभी फिर भी समय है। शान्ति के टाइम में पढ़ाई अच्छी होती है। फिर जब जिंदगी में धंधा-धोरी लग जाते हैं, शादी-वादी की मारामारी हो जाती है तो पढ़ाई नहीं होती। ये भी परमात्मा बाप पढ़ाय रहा है। अपनी-2 पढ़ाई पूरी कर लेनी चाहिए। अनेक जन्मों का सुख-शान्ति का वर्सा जल्दी से ले लेना चाहिए। अच्छा। ओम् शान्ति।

---

**Contact Us**

**Address**

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

**Mobile** - 9891370007, 9311161007

**Email** - a11spiritual1@gmail.com

**Website** – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

**Youtube** – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

**Twitter** - @adhyatmikaivv

**Instagram** - @adhyatmikvidyalaya

**Linkedin** – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

---

01.01.2025